एस॰ एस॰ कॉलेज जहानाबाद।
विभाग - हिन्दी
विषय - भाषा विज्ञान, स्नातक प्रतिष्ठा भाग - 3
समय - 11.30 to 12.30, 27.5.20.
शिक्षण माध्यम - व्हाट्स-एप
शिक्षक - डॉ॰ रमेश शर्मा

पाठ - ज्ञान विज्ञान की अन्य शाखाओं से भाषा विज्ञान का संबंध।

प्रिय छात्र-छात्राओं !

ज्ञान की सीमा नहीं होती, यह तथ्य है। ज्ञान अखंड है इसे भी नकारा नहीं जा सकता। वस्तुत: इसकी पुष्टि हो जाती है क्योंकि इसे इस तरह शास्त्रों एवं विज्ञानों में विभाजित नहीं किया जा सकता कि वे एक दूसरे से पूर्णत: भिन्न हो। इस स्थिति में अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखकर ही इसका विभाजन किया जा सकता है। भाषा विज्ञान का अन्य ज्ञान-विज्ञानों से सम्बन्ध इसी आधार पर निर्धारित किया गया है।

भाषा विज्ञान और व्याकरण – भाषाविज्ञान को व्याकरणों का व्याकरण कहा जाता है। इससे इन दोनों विषयों की समानता और अन्तर का बोध हो जाता है। भाषा में कहाँ कैसा प्रयोग होना चाहिए, कैसा प्रयोग शुद्ध है कैसा प्रयोग अशुद्ध इसका विवरण व्याकरण प्रस्तुत करता है। इस विवरण का उद्देश्य उन नियमों का निरूपण है जिससे भाषाएँ परिचालित हुआ करती हैं। इस प्रकार वह भाषा की सहज गत्यात्मकता का विरोध करता है। भाषा वैज्ञानिक तटस्थ वृत्ति का अनुसरण करके प्रस्तुत भाषा का वैज्ञानिक विवेचन करता है। भाषा विज्ञान का तथ्य जो होता है, उसे 'ऐसा है' अथवा 'ऐसा नहीं है' के रूप में कहता है। हरीश शर्मा ने भाषाविज्ञान की रूप-रेखा में व्याकरण को आरोपित आदर्शों का समर्थक कहा है तो भाषा विज्ञान को यथार्थ का दुर्धर्ष पक्षधर माना है। भाषा विज्ञान तो गहराई में जाकर यह भी पता

लगाता है कि रूप क्या है? कहाँ से आया है अथवा कितना पुराना है। उदाहरणार्थ व्याकरण यदि 'जा' का मूलकालिक रूप 'गया' मानता है तो भाषाविज्ञान गहराई में जाकर बतलाता है कि 'जा' का 'गया' से कोई सम्बन्ध नहीं है। संस्कृत के 'गम्' और 'या' धातुएँ थीं, 'गम्' से गया रूप हिन्दी में आया और 'जा' से जाना, जाता, जाये, जाया आदि रूप का विकास हुआ, चूंकि 'गम्' धातु से एक ही रूप आया इसलिए इसे भी 'जा' धातु में ही मिला दिया गया। अतः दोनों सम्बन्धों का सवाल है दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। बिना भाषाविज्ञान की जानकारी के व्याकरण नहीं लिखा जा सकता तथा भाषा विज्ञान भी भाषाओं के विश्लेषण में व्याकरण की पर्याप्त सहायता लेता है।

भाषा विज्ञान और साहित्य :— साहित्य और भाषाविज्ञान का अन्योन्याश्रय संबंध है। भाषा विज्ञान अपने अध्ययन के लिए साहित्य से सामग्री लेता है तो साहित्य भाषा का उपयोग करता है एवं भाषाविज्ञान की सहायता से प्राचीन साहित्य का अध्ययन करता है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि जिस भाषा का साहित्य नहीं उपलब्ध है उसका कम से कम ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन तो संभव नहीं है। भाषावैज्ञानिक ध्वनि एवं रूप परिवर्तन के सिद्धान्तों का जानकार होने के नाते साहित्य में प्रयुक्त शब्द के मूल तक पहुँच सकता है। भाषा के लिए साहित्य के महत्व को प्रतिपादित करते हुए आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने कहा है कि "हमारे यहाँ ऋग्वेद में प्रयुक्त भाषा के पहले भी कोई भाषा रही होगी किन्तु उसका साहित्य प्राप्य नहीं रहने से उसके सम्बन्ध में आज कुछ भी कहने में हम असमर्थ हैं।" इस प्रकार भाषा के सम्बन्ध में क्यों, कब, कैसे आदि के उत्तर के लिए भाषाविज्ञान को साहित्य की

छानबीन करनी ही पड़ेगी। उदाहरण के तौर पर भाषा यह तो बतला सकती है कि भोजपुरी में 'बाटे' शब्द है पर उसकी उत्पत्ति एवं विकास के लिए भाषाविज्ञान को संस्कृत तक पहुँचना ही पड़ेगा जिसमें मूल रूप 'वर्तते' है। तात्पर्य यह कि भाषा के ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन के लिए साहित्य ही उपयोगी सिद्ध हो सकती है। यहाँ भाषा विज्ञान की महत्ता भी ध्यातव्य है। साहित्य में ऐसे शब्द भी मिलते हैं जिनका अर्थ आसानी से समझ में नहीं आता है या सन्देह रहता है। भाषा विज्ञान शब्दों के मूल रूप को खोजकर क्लिष्ट अर्थों, विभिन्न प्रयोगों तथा उच्चारण संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालता है। संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, ईरानी स्लाविक आदि भाषाओं को भारत-यूरोपीय परिवार के अन्तर्गत के रखना साहित्य और भाषाविज्ञान के सहयोग से ही संभव हो सका है। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के सहयोगी हैं।

शेष विषयों से भाषाविज्ञान के सम्बन्धों पर चर्चा अगली कक्षा में होगी।

(शेष ...)

29.5.20